शोध प्रतिवेदन

"शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का उनकी कार्य क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

निर्देशक
डॉ. शिप्रा गुप्ता
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
शान्ति
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

वर्तमान समय में उन्नत ज्ञान–विज्ञान की अवस्था में जहां भूण्डलीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व एक गांव में बदल गया है। ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारियां और अधिक बढ़ गई हैं। यदि शिक्षक उत्कृष्ट होंगे तो वे भावी पीढ़ी को सही दिशा–निर्देश दे सकेगें। इसके लिए उनकी कार्य संतुष्टि आवश्यक है ताकि उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि हो सके। चरित्र निर्माण शिक्षा का उद्देश्य है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अध्यापक अपने व्यक्तित्व का प्रयोग करता है। यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट नहीं होंगे तो वे पूर्ण समर्पण व निष्ठा से अध्यापन कार्य नहीं करवा पायेगें।

कार्य सन्तुष्टि एक अस्पष्ट अवधारणा है। जो कार्य की संस्कृति का अभिन्न अंग है। जबकि कार्य में एक संगठन, कार्य के प्रति लोगों का व्यवहार, पर्यवेक्षण, कार्य के प्रति अनुबन्धन आदि आते हैं। ये सभी तत्व की कार्य–संतुष्टि की अवधारणा को गठित करते है। र्वप्रथम कार्य संतुष्टि की संकल्पना 1935 में होपॉक ने दी थी। इन्होंने कार्य संतुष्टि को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि कार्य–संतुष्टि मानसिक, शारीरिक, पर्यावरणीय कारकों के मेल से बनती है। जो व्यक्ति इन सभी से स्वयं को संतुष्ट पाता है वह विश्वास से कह सकता है कि मैं अपने कार्य से

संतुष्ट हूँ। जिससे उनकी कार्य क्षमता स्वतः ही बढ़ जाती है। अतः एक शिक्षक की कार्य संतुष्टि तब होगी जब वह शारीरिक, मानसिक, वातावरणीय कारकों तीनों से संतुष्ट होगा। यदि वह इन तीनों कारकों से संतुष्ट होगा तो उसकी कार्य क्षमता में बढ़ोतरी होगी।

अध्ययन का औचित्य :–

अध्यापक का समाज मे अति महत्वपूर्ण स्थान होता है। हुमायुँ कबीर के अनुसार अध्यापक एक राष्ट्र का भाग्य निर्माता होता है। एक शिक्षक अपनी शैक्षिक प्रक्रिया सें समाज का पुनः निर्माण कर सकता है। यह सत्य है कि एक शिक्षक अपने जीवन काल में अनेक लोगों को बौद्धिक परम्पराएँ व तकनीकी कौशल प्रदान करता है। जो कि एक राष्ट्र को नया आकार प्रदान करते हैं। यह कार्य वही शिक्षक कर सकता है जो अपने कार्य से संतुष्ट हो। एक अध्यापक की कार्य संतुष्टि से आशय है– उच्च मानसिक स्वास्थ्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य, दक्षता, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति, आदि से है। जब शिक्षक की स्थिति इनमें उच्च होती है तो उसकी कार्य क्षमता बढ़ जाती है।

शिक्षण व्यवसाय में शिक्षक–प्रशिक्षक एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। क्योकि वह भावी शिक्षकों को तैयार करता है। एक प्रभावी व सक्षम शिक्षक–प्रशिक्षक राष्ट्र के विकास में सहायता देता है। वह सम्पूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था का मूल बिन्दु होता है। शिक्षक–प्रशिक्षक केवल महत्वपूर्ण भूमिका ही नही निभाते बल्कि ऐसे शिक्षकों को तैयार करते है जो विद्यालय मानव समाज मे अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। लेकिन वर्तमान में शिक्षक कार्य अति लाचार व दयनीय स्थिति में पहुँच गया है। क्या इसका कारण शिक्षण–प्रशिक्षको की कार्य संतुष्टि व कार्य क्षमता कि भावना तो नही। शिक्षा के आदर्श तथा लक्ष्य उद्देश्य सम्पूर्ण रूप सें शिक्षक–प्रशिक्षको की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। क्योकि वे भावी शिक्षको का निर्माण करते है। इसलिए उनकी कार्य संतुष्टि जानना अति आवश्यक है।

वर्तमान समय मे ऐसे शिक्षको कि आवश्यकता है जो समाज में फैल रही अराजकता, मूल्यहीनता को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता व सद्भावना का विचार बालकों में भर सकें। ताकि वे बालक नवीन समाज का निर्माण कर सके जहाँ अहिंसा, शांन्ति, सद्भावना जैसे गुण समाज मे हो। ऐसे शिक्षको का निर्माण शिक्षक–प्रशिक्षकों के

हाथों में है। शिक्षक–प्रशिक्षक उस कार्य को तभी कर पायेंगे जब वे अपने कार्य से संतुष्ट होंगे। अतः वे कौन–कौनसे चर है जो शिक्षक प्रशिक्षक की कार्य संतुष्टि व कार्य क्षमता से सम्बद्ध है। जानने के क्रम में शोधकर्त्री के मन मे कुछ प्रश्न उपस्थित हो रहे है जो इस प्रकार है–

समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित है–

1. क्या कार्य संतुष्टि की भावना शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य क्षमता को प्रभावित करती है?
2. क्या शिक्षक–प्रशिक्षकों के कार्य की अधिकता उनकी कार्य क्षमता को प्रभावित करती है?
3. क्या शिक्षण संस्थाओं का वातावरण शिक्षकों की कार्य क्षमता को प्रभावित करता है?
4. आर्थिक सुरक्षा शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि पर क्या प्रभाव डालती है?
5. क्या सामाजिक प्रतिष्ठा कार्य–संतुष्टि को प्रभावित करती है?
6. शिक्षक–प्रशिक्षकों की सेवा प्रकृति उनकी कार्य क्षमता के प्रभावित करती है?
7. क्या शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक–प्रशिक्षकों की लिंग की भिन्नता भी उनकी कार्य संतुष्टि को प्रभावित करती है?
8. क्या ग्रामीण व शहरी शिक्षण–संस्थाओं के शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि भिन्न–भिन्न है।

समस्या कथन :–

''शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का उनकी कार्य क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध की निम्न उद्देश्यों को प्रतिपादित किया गया है –

1. शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का कार्य क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया।
2. शहरी व ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया।

3. ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया।
4. ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता का अध्ययन किया गया।
5. ग्रामीण व शहरी पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता का अध्ययन किया गया।
6. महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध की निम्न परिकल्पना प्रतिपादित की जाती है–

1. शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का उनकी कार्यक्षमता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. ग्रामीण व शहरी शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण व शहरी शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता के प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. शहरी व ग्रामीण महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के प्राप्तांको में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

महत्व :–

शिक्षागत क्षेत्र में यह शोध मील का पत्थर साबित होगा। शोध में प्राप्त निष्कर्ष व परिणामों से शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य क्षमता की दिशा व दशा उजागर होगी। शिक्षक–प्रशिक्षक अपनी कार्य संतुष्टि का स्वमूल्यांकन कर सकेंगे। जिससे उन्हें अपनी कार्य–क्षमता, आर्थिक–सुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यावसायिक उन्नति, निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी आदि बातों की जानकारी हो सकेगी।

प्रशासनिक स्तर पर यह शोध शिक्षा अधिकारी व शिक्षा से जुड़े अन्य अधिकरीगण शिक्षको ंकी समस्या जानकर उन्हें हल करने का प्रयास करेंगे। विभिन्न शिक्षण–संस्थाओं के प्रबन्धक भी शिक्षकों की समस्या से परिचित होंगे। उनकी कार्य संतुष्टि को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

यह शोध उन विद्यार्थियों के लिए भी अति महत्वपूर्ण होगा जो भविष्य में शिक्षक–प्रशिक्षक बनेंगे।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

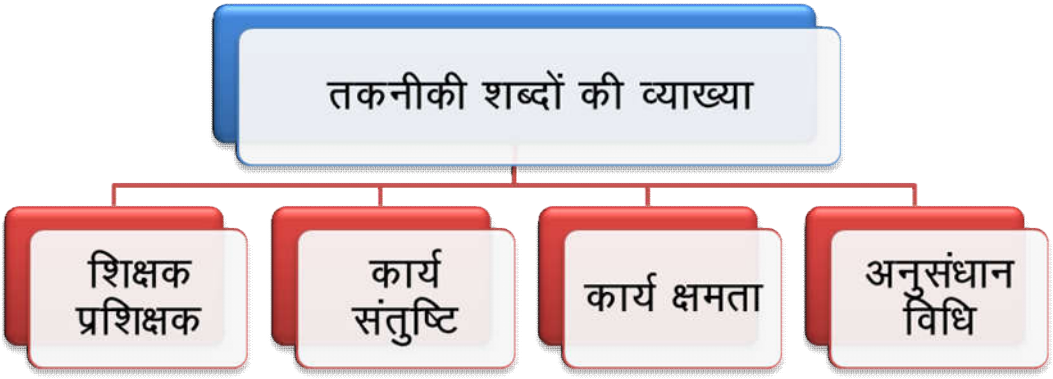

अनुसंधान के चर :–

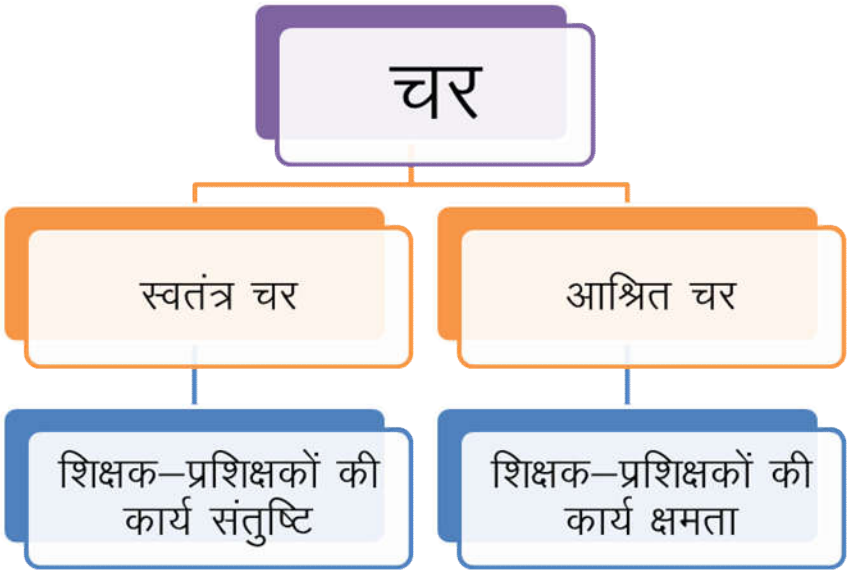

1. **स्वतंत्र चर :–** प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर कार्य संतुष्टि होगा।
2. **आश्रित चर :'–** प्रस्तुत अध्ययन में आश्रित चर कार्य क्षमता होगा।

अध्ययन के स्त्रोत :–

प्राथमिक स्त्रोत :– जयपुर शहर के शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यरत व्याख्याता।

द्वितीयक स्त्रोत :– पुस्तक पत्र–पत्रिका आदि।

शोध की प्रकृति :–

प्रस्तुत शोध में प्रदतों की प्रकृति–मात्रात्मक व गुणात्मक है।

परिसीमा :–

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र जयपुर शहर में स्थित ग्रामीण व शहरी शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाएं होगी। जिसमें शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य–क्षमता व कार्य–संतुष्टि का अध्ययन करके मध्यमान, प्रमाप विचलन व आनुपातिक परीक्षण द्वारा परिणाम निकाला जायेगी। यह अध्ययन केवल शिक्षक–प्रशिक्षकों पर ही किया गयी। प्रस्तुत अध्ययन में 50 ग्रामीण शिक्षक–प्रशिक्षक एवं 50 शहरी प्रशिक्षक लिए गये।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के शिक्षक–प्रशिक्षकों को लिया जाएगा।

न्यादर्श :–

''प्रत्येक विज्ञान की शाखा में हमारे साधन सीमित है इसलिए सम्पूर्ण तथ्य के एक अंश से अधिक का अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसके विषय में ज्ञान प्रस्तुत किया गया।''[1]

(डब्ल्यू जी कोकरन)

प्रस्तुत शोध में साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया।

महाविद्यालय	शिक्षक	संख्या	योग
ग्रामीण शिक्षक–प्रशिक्षक महाविद्यालय	महिला	25	50
	पुरुष	25	

[1] *बारोलिया डॉ. व सिंह रीता :– ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी'' पृ.स. 208.*

शहरी शिक्षक–प्रशिक्षक महाविद्यालय	महिला	25	50
	पुरुष	25	

अध्ययन के उपकरण :–

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्न उपकरण लिए जायेगे :–

मानकीकृत उपकरण :– प्रमापीकृत– कार्य संतुष्टि मापनी (डॉ. आशा हिंगर, डॉ. उमा मित्तल, डॉ. विनिता माथुर और मानसी परनामी)

स्वनिर्मित उपकरण :– कार्यक्षमता मापनी

साक्षात्कार :– अर्द्ध संरचित

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

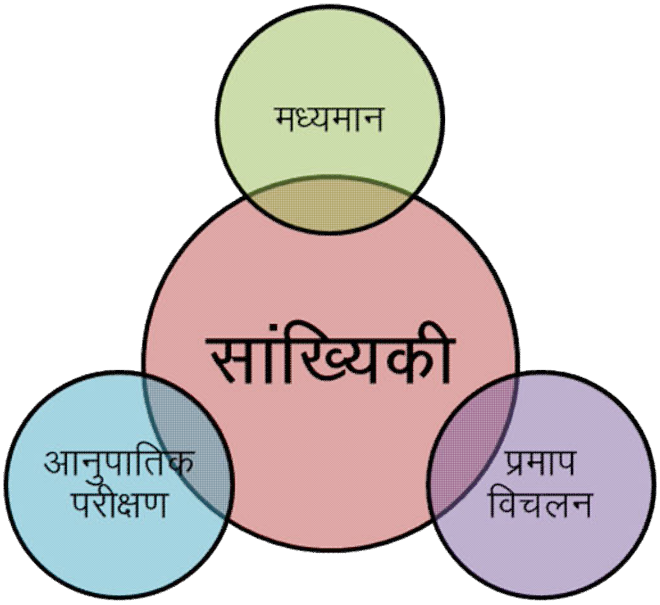

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष :–

1. शोध परिकल्पना 1 के परीक्षण से निष्कर्ष है कि शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का उनकी कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है अर्थात यदि शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर बढ़ेगा तो उनकी कार्यक्षमता स्वतः ही बढ़ जाएगी और यदि उनकी कार्य संतुष्टि के स्तर में कमी आएगी तो उनकी कार्यक्षमता में भी कमी आएगी।

2. शोध परिकल्पना–2 के परीक्षण से निष्कर्ष निकलना है कि कार्य संतुष्टि के प्रत्येक आयाम (वेतन व सुविधाएं, निरीक्षण, पदोन्नति, कार्य, मानवीय संबंध) से ग्रामीण व शहरी शिक्षक–प्रशिक्षक संतुष्ट पाए गए तथा उनकी कार्य संतुष्टि समान पाई गई।

3. शोध परिकल्पना–3 के परीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि शहरी व ग्रामीण शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता में कोई अन्तर नहीं है अर्थात शहरी व ग्रामीण शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता समान है। इसके संभावित कारण हो सकते है समान कार्य के लिए समान वेतन। कार्य की प्रकृति एक जैसी होना।

4. शोध परिकल्पना–4 के परीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता में कोई अन्तर नहीं है अर्थात दोनों समूहों के पुरूषों की कार्यक्षमता समान है।

5. शोध परिकल्पना–5 के परीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि शहरी व ग्रामीण महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों कार्य संतुष्टि के आयाम वेतन व सुविधाएं, पदोन्नति, निरीक्षण, कार्य, मानवीय संबंध से संतुष्ट पाई गई तथा उनकी कार्य संतुष्टि में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

6. परिकल्पना–6 के परीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि महिला व पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई अन्तर नहीं है अर्थात कार्य संतुष्टि के प्रत्येक बिन्दु वेतन व सुविधाएं, पदोन्नति, निरीक्षण, कार्य एवं मानवीय संबंध के संबंध में संतुष्ट पाए अर्थात महिला व पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि में समान है। इसके संभावित कारण हो सकते है। वर्तमान में महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी बढ़ गई है। वेतन, भत्ते, व अन्य सुविधाएँ उन्हें पुरूष शिक्षकों के समान ही मिलती है एवं सामाजिक मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा स्वावलम्बन की भावना में वृद्धि होने के फलस्वरूप ही महिला एवं पुरूष शिक्षक – प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

प्रस्तुत शोध कार्य एम.एड. की अल्प अवधि में किया गया एक लघु प्रयास है। प्रस्तुत शोध के परिणामों को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि संबंधित विषय में किया गया शोध कार्य अन्य विषयों पर किया जाए। शोधकर्त्री ने सीमित तत्वों को लेकर अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त अन्य तत्व है, जिन पर शोध कार्य किया जा सकता है। अतः शोधकर्त्री अपना कर्त्तव्य समझती है कि अनुसंधान के लिए सुझावों से अवगत कराएं। अतः उपरोक्त बिन्दुओं पर विचार करने के पश्चात शोधकर्त्री ने भावी अनुसंधान के कुछ सुझाव दिए जो निम्न है–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल जयपुर जिले के शिक्षक–प्रशिक्षकों पर किया गया है। अतः एक शोधकर्ता अन्य जिलों के शिक्षक–प्रशिक्षकों को लेकर अपना शोध कार्य कर सकता है।
2. यह शोध कार्य जयपुर जिले के 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों को लेकर किया गया है। अतः एक बड़ा न्यादर्श लेकर भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. यह शोध कार्य कार्य–संतुष्टि के केवल पांच तत्वों (वेतन, निरीक्षण, पदोन्नति, कार्य, मानवीय संबंध) को लेकर किया गया है। अतः कार्य संतुष्टि के अन्य तत्वों को लेकर भी अध्ययन कार्य किया जा सकता है।
4. शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि व कार्यक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
5. यह शोध कार्य केवल शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि व कार्यक्षमता पर किया गया है। अतः अन्य व्यवसायों के कर्मचारियों की कार्य–संतुष्टि व कार्यक्षमता जानने के लिए भी किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राचार्यो पर भी किया जा सकता है।
7. यह शोध सरकारी व गैरसरकारी शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
8. यह शोध सरकारी व गैर सरकारी शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।